

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रजवी दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पढले जैल में दी हुई दुआ पढ लीजिये
अन् شاء الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अद्लाह एَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मी हिकमत के दरवाजे भोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल इरमा ! ओ अज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المستطرف ج 1 ص 41 دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आबिर ओक ओक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना
व भकीअ
व मस्जिदत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



मैं सुधरना याहता हूँ

येह रिसाला (मैं सुधरना याहता हूँ)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हजरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रजवी जियाई दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उई ज़बान में तहरीर इरमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को गुजराती रस्मुल भत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-भतुल मदीना से शाअेअ करवाया है. इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (ब जरीअअे मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ इरमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-भतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

﴿اِبْرَاهِيْمَ﴾
 ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ. (1)

याद रख कर उन पर धरते रहते हैं.

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

नेकी कर के भूल जाओ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! અક્લ મન્દ વોહી હૈ જો નેકિયોં કે હુસૂલ કી સઆદત પા કર ઉન્હેં ભૂલ જાએ ઓર ગુનાહ સાદિર હો જાએં તો ઉન્હેં યાદ રખે ઓર ખુદ કો સુધારને કે લિયે ઉન પર સખ્તી સે અપના મુહા-સબા કરતા રહે. બલકે નેક આ'માલ મેં કમી પર ભી ખુદ કો સર-ઝનિશ (યા'ની ડાંટ ડપટ) કરે ઓર હર લમ્હા ખુદ કો અલ્લાહ વાહિદે કહ્હાર عَزَّوَجَلَّ કે કહરો ગઝબ સે ડરાતા રહે. યેહી હમારે બુઝુગાને દીન رَحْمَهُمُ اللّٰهُ الْبَرِّیْنِ કા મા'મૂલ રહા હૈ. યુનાચ્ચે

आज “क्या क्या” किया ?

અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉમરે ફારૂકે આ'ઝમ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ રોઝાના અપના એહતિસાબ ફરમાયા કરતે, ઓર જબ રાત આતી તો અપને પાઉ પર દુર્રા માર કર ફરમાતે : બતા, આજ તૂને “ક્યા ક્યા” કિયા હૈ ?

(أحياء العلوم ج ٥ ص ٤١ ادار صادر بيروت)

અલ્લાહુ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત عَزَّوَجَلَّ કી ઉન પર રહમત હો ઓર ઉન કે સદકે હમારી મઙ્ગિરત હો.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ફારૂકે આ'ઝમ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ કી આજિઝી

હઝરતે સય્યિદુના ઉમરે ફારૂકે આ'ઝમ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ અ-શ-રએ મુબશ્શરહ યા'ની જિન દસ સહાબએ કિરામ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ કો

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا ۖ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : تُوْمَ جَلْدًا لَمْ يَلِدْهُ مُؤَلِّمًا عَلَيْهِ دُرَّةً مِنْ دُرَّةِ كَلْبٍ لَمْ يَلِدْهَا دُرَّةٌ مِنْ دُرَّةِ كَلْبٍ﴾
 (طبرانی)

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہِ وَسَلَّمَ ने जन्त की बिशारत सुनाई
 उन में शामिल और सय्यिदुना सिद्दीके अकबर رَضِيَ اللہ تَعَالَى عَنْہُ के भा'द
 सब से अइजल होने के बा वुजूद बहुत ईन्किसारी इरमाया करते थे.
 युनान्चे हजरते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللہ تَعَالَى عَنْہُ इरमाते
 हैं : अक बार में ने हजरते सय्यिदुना उमर इरके आ'जम रَضِيَ اللہ تَعَالَى عَنْہُ
 को अक भाग की दीवार के करीब देखा के वोह अपने नइस से इरमा रहे
 थे : “वाह ! लोग तुजे अभीरुल मुअमिनीन कहते हैं (इर बतौरे आजिजी
 इरमाने लगे) और तू (तो वोह है के) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ से नहीं उरता ! (याह
 रभ !) अगर तूने अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का भौइ नहीं रभा तो उस के अजाब
 में गिरिइतार हो जायेगा.”

(किमीके سعادت ج ۲ ص ۸۹۲ تهرآن)

अद्लाहु रब्बुल इज्जत عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सहके
 हमारी भइरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! हजरते सय्यिदुना उमर इरके
 आ'जम रَضِيَ اللہ تَعَالَى عَنْہُ का ईस तरह अपने नइस को मलामत करना,
 और अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का भौइ दिला कर उस का मुडा-सभा करना हमारी
 ता'लीम के लिये भी था. युनान्चे

कियामत से पहले हिसाब

अक मौकअ पर सय्यिदुना उमर इरके रَضِيَ اللہ تَعَالَى عَنْہُ ने ईशाद
 इरमाया : “अै लोगो ! अपने आ'माल का ईस से पहले मुडा-सभा कर
 लो के कियामत आ जाये और उन का हिसाब लिया जाये.”

(احياء العلوم ج ۵ ص ۱۲۸)

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुर्रुदे पाक पढा अद्वलाह उंस पर सो रलमतें नाजिल इरमाता है. (طرائف)

अद्वलाहु रब्बुल ईज़्जत عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रलमत हो और उन के सदके हमारी मङ्गिरत हो. أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मुहा-सभा किसे कहते हैं

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अपने साबिका आ'माल का हिसाब करना मुहा-सभा कहलाता है. काश ! रोजाना रात “इंकि मदीना¹” करते हुअे हमें अपने नफ्स के साथ तमाम दिन का हिसाब करने की सआदत मिल जाया करे और यूं हमें सरमायअे आ'माल में नफ्स व नुकसान की मा'लूमात होती रहे. जिस तरह शरीके तिज्जरत से हिसाब लेने में त्तरपूर कोशिश की जाती है इसी तरह नफ्स के साथ भी हिसाब किताब में बहुत ज़ियादा अेहतियात ज़रूरी है क्यूंके नफ्स बहुत यालाक और हीलासाज है येह हमें अपनी सरकशी भी ईताअत के लिबास में पेश करता है ताके बुराई में भी हमें नफ्स नजर आअे ढालांके इस में सरासर नुकसान है. सिर्फ़ येही नहीं बल्के सहीह मा'नों में सुधरने के लिये तमाम ज़ाईज उमूर में भी नफ्स से हिसाब तलब करना याहिये. अगर इस में हमें नफ्स का कुसूर नजर आअे तो उस से सप्तती के साथ कमी पूरी करवानी याहिये. जैसा के हमारे अस्लाफ़ رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى का अमल रहा. युनान्थे

مدینہ

1 : फुद को सुधारने के बेहतरीन नुस्खे “म-दनी ईन्आमात” में से अेक म-दनी ईन्आम “इंकि मदीना” भी है. या'नी रोजाना रात को अपने आ'माल का मुहा-सभा करे और इस दौरान म-दनी ईन्आमात का रिसाला भी पुर करे.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा ठिक छो और वोह मुज पर दुरद शरीफ न पढे तो वोह लोगो में से कन्जूस तरीन शाप्स है. (त्रिभुजिया)

यराग पर अंगूठा

बहुत बडे आलिम और ताबेई बुजुर्ग हजरते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन कैस رضی اللہ تعالیٰ عنہ रात के वक्त यराग हाथ में उठा लेते और उस की लौ पर अंगूठा रख कर इस तरह फरमाते : **अै नफ़स ! तूने कुलां काम क्यूं किया ? और कुलां चीज क्यूं षाई ?** (किमै सै सैदत ज २ व १९३ तहरान)

अदलाहु रब्बुल ईज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी मग़्फ़िरत हो. **أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

या'नी अपना मुखा-सबा करते के अगर मेरे नफ़स ने ग-लती की हो तो उस को तम्भीह हो के येह यराग की लौ जो के बहुत ही हलकी आग है फिर भी जब ना काबिले बरदाश्त है तो त्वा जहन्नम की तयानक आग सहना क्यूंकर मुग्किन होगा ! **हुजुतुल ईस्लाम** हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली **رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** इस तरह की अेक और हिकायत नकल करते हुअे फरमाते हैं :

कभी ठीपर न देखूंगा

हजरते सय्यिदुना मजमअ नामी अेक बुजुर्ग **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अेक मर्तबा ठीपर की तरफ़ देखा तो अेक छत पर मौजूद किसी औरत पर नज़र पड गई. फ़ौरन निगाह जुका ली और इस कदर पशेमान हुअे के अह्द कर लिया “आयन्दा कभी भी ठीपर न देखूंगा.” **(احياء العلوم ج ० ص १६۱ دار صادر بيروت)** अदलाहु रब्बुल ईज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी मग़्फ़िरत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इरमाने मुस्तकिल: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पढे. (म)

आंभ उठती तो मैं जुंजुला के पलक सी लेता

दिल बिगडता तो मैं घबरा के संभाला करता

(जौके ना'त)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आप ने मुला-हजा इरमाया के हमारे अस्लाइ की कैसी म-दनी सोय हुवा करती थी के ग-लती से नजर ना महरम पर जा पडी और अयानक पड जाने वाली नजर मुआइ होने के भा वुजूद भी उन्हों ने कत्मी ठीपर न देभने का अइद कर लिया या'नी मुस्तकिल आंभों का “कुइले मदीना” लगा लिया.¹

आका की डया से जुकी रहती नजर अकसर

आंभों पे मेरे भाई लगा कुइले मदीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अगर जन्नत से रोक दिया गया तो !

उजरते सय्यिहुना ईब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ अक मर्तबा गुस्ल इरमाने के लिये किसी हम्मा म पर गअे. हम्माभी ने आप को रोक कर हिरहम (या'नी रुपै) तलब कर लिये. और कइ दिया के अगर हिरहम अदा न करेगे तो दाखिल न होने दूंगा. उस के येह कइने पर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने रोना शुरुअ कर दिया. हम्माभी ने परेशान हो कर अर्ज की : अगर आप के पास हिरहम नही हें तो कोई बात

1: दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल में बोली जाने वाली ईस्तिवाह “कुइले मदीना” की तइसीली मा'लूमात के लिये अभीरे अइले सुन्नत صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ का तइरीरी बयान “कुइले मदीना” का मुता-लआ इरमाईये. मजलिसे मक-त-अतुल मदीना

करमाने मुस्तफ़ा. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (क़ुरआन)

नहीं, आप वैसे ही गुस्ल इरमा लीजिये. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया : मैं इस वजह से नहीं रोया के आप ने मुझे रोक दिया है बटके मुझे तो इस बात ने रुला दिया के हिरलम न होने की वजह से आज मुझे जैसे हम्माम में जाने से रोक दिया गया है जिस में नेकूकार व गुनहगार सभी नहाते हैं. आह ! अगर नेकियां न होने की बिना पर कल मुझे उस जन्नत से रोक लिया गया जो सिर्फ़ नेकों का मकाम है, तो मेरा क्या बनेगा ! अल्लाहु रब्बुल ʿज़ज़त ʿज़ज़ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो. اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! येह उन नुईसे कुदसिय्या के वाकिआत हैं जो परवर दगार ʿज़ज़ के परहेज़ गार बन्दे हैं, जिन के सरों पर अल्लाहु रब्बुल ʿज़ज़त तभा-र-क व तआला ने विलायत के ताज सजाये हैं. मुला-हज़ा इरमाईये के वोह औलियाये किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام अ-ई हमा शरफ़ व मर्तबत (या'नी विलायत जैसा अज़ीम मर्तबा हासिल होने के बा वुजूद) किस तरह नईस को सुधारने के लिये उस का मुहा-सबा इरमाते और जुद को आजिओ गुनहगार तसव्वुर करते. काश ! हम भी सुधरने का जज़बा रभते हुअे अपना मुहा-सबा कर पाते और जते ज अपने आ'माल का ज़अेजा लेने में काम्याब हो जाते. गुज़श्ता डि़कायत से मा'लूम हुवा के अल्लाह ʿज़ज़ के नेक बन्दे हुन्यवी मुसीबत को याद आभिरत का जरीआ बनाते थे. इस ज़िम्न में अेक और डि़कायत समाअत इरमाईये. युनान्ये

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह उज्रुतुम पर रडमत बेजगा. (अबु हुरैर)

हथ-कडियां और बेडियां

मुफ़स्सिरे कुरआन, साडिबे भजाधनुल धरफ़ान डी तइसीरिल कुरआन, पलीफ़अे आ'ला हजरत, हजरते सदरुल अफ़जिल अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नधमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي अपनी मशहूर किताब "सवानेहे करबला" के सफ़हा नम्बर 60 पर इरमाते हैं : हज्जज्ज बिन यूसुफ़ के दौर में दूसरी बार हजरते सय्यिदुना धमाम जैनुल आबिदीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को कैद किया गया और लोहे की भारी जन्जरों में आप का तने नाजनीन जकड लिया गया और पडरेदार मु-तअय्यन कर दिये गअे. मशहूर मुहदिस हजरते सय्यिदुना धमाम जोहरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ डालिर हुअे और आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की डालते जार देभ कर रो पडे और अपने जजभाते कलबी का धजहार करते हुअे अर्ज गुजार हुअे : आड ! येड कैफ़ियत मुज से देभी नहीं ज़ रही अै काश ! आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बदले यडं में धस तरड कैद डोता ! येड सुन कर जनाबे धमाम रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : "आप समजते हैं धस कैदो बन्द की वजह से मैं धजतराभ में हूँ, डकीकत येड है के अगर मैं याहूँ तो अल्लाह उज्रुतुम के इजलो करम से अत्मी आजाद डो ज़ां मगर धस सजा पर सभ्र में अज्ज है. धन बेडियों और जन्जरों की बन्दिशों में जडन्नम की भौफ़नाक आ-तशीं जन्जरों, आग की बेडियों और अजाबे धलाडी की याद है." येड इरमा कर बेडियों में से पाउ और हथ-कडियों में से डथ निकाल दिये ! अल्लाहु रब्बुल धज्जत उज्रुतुम के उन पर रडमत डो और उन के सदके डमारी मग़िरत डो.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : मुझ पर कसरत से दुरुद्वे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुद्वे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्गिरत है. (भाष्य)

सांस की माला

હઝરતે સચ્ચિદ્વના ઈમામે હસન બસરી رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હેં : “જલ્દી કરો ! જલ્દી કરો ! તુમ્હારી ઝિન્દગી ક્યા હૈ ? યેહ સાંસ હી તો હેં કે અગર યેહ રુક જાએ તો તુમ્હારે ઉન આ’માલ કા સિલ્સિલા મુન્કતેઅ હો જાએ જિન સે તુમ અલ્લાહ غَزَّ وَجَلَّ કા કુર્બ હાસિલ કરતે હો. અલ્લાહ غَزَّ وَجَلَّ રહ્મ ફરમાએ ઉસ શખ્સ પર જિસ ને અપને આ’માલ કા જાએઝા લિયા ઓર અપને ગુનાહોં પર કુછ આંસૂ બહાએ.”

(اتحاف السادة المتقين ج ٤ ص ٧١ دار الكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

બે અમલ બે વુકૂફ હોતા હૈ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ગૌર કીજિયે કે હમ તો સર તા પા ગુનાહોં મેં ડૂબે હેં, આખિર કૌન સા ગુનાહ એસા હૈ જો હમ નહીં કરતે ? નેકિયાં હમ સે નહીં હો પાતીં ઓર અગર હો ભી જાએં તો ઈખ્લાસ કા દૂર દૂર તક કોઈ પતા નહીં હોતા, લોગોં કો અપને નેક આ’માલ સુના કર રિયાકારી કી તબાહકારી કા શિકાર હો જાતે હેં, હમારા નામએ આ’માલ નેકિયોં સે ખાલી ઓર ગુનાહોં સે પુર હોતા જા રહા હૈ. લેકિન અફસોસ ! હમેં ઈસ કે બુરે નતાઈજ ઓર ખુદ કો સુધારને કા કોઈ એહસાસ નહીં, ઓર ઈસ પર તુર્કા યેહ કે હમ ખુદ કો બહુત અકલ મન્દ ગુમાન કરતે હેં હત્તા કે અગર કોઈ હમેં બે વુકૂફ યા કમ અકલ કહ દે તો ઉસ કે દુશ્મન હી હો જાએં. લેકિન અબ આપ હી બતાઈયે કે અગર

करमाने मुस्तफ़ा عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जो मुज पर अक दुइद शरीक पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज लिखता है और कीरात उलुद पढाउ जितना है. (मुरात)

किसी मफ़र मुजरिम की इंसी का हुकम नामा ज़री हो युका हो, पोलीस उस को तलाश कर रही हो और वोह गिरिफ़्तारी से बे भौड़, राहे तहफ़्फ़ुज व अेडतियात तर्क कर के आजादाना धूम रहा हो तो क्या उस को अकल मन्द कहेंगे ? हरगिज नहीं ! जैसे आदमी को लोग बे वुकूफ़ ही कहेंगे.

जहन्नम के दरवाजे पर नाम

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जिसे जता दिया गया हो के “जिस ने कस्दन नमाज छोडी जहन्नम के दरवाजे पर उस का नाम लिख दिया जाता है.” (حِكْمَةُ الْأَسْمَاءِ ج ٧ ص ٢٩٩ رقم ١٠٥٩٠ دارالكتب العلمية بيروت) और येह भी ખબर दे दी गई हो के “जो माहे र-मजान का अेक रोज़ा भी बिला उउरे शर-ई व मरज कजा कर देता है तो जमाने त्तर के रोज़े उस की कजा नहीं हो सकते अगर्ये आ'द में रખ भी ले.” 1 (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٢ ص ١٧٥ حديث ٧٢٣ دارالفكر بيروت) और येह भी ખબर दे दी गई हो के जो शप्स उज के ज़ादे राह (अफ़राजत) और सुवारी पर कादिर हो जो उसे बैतुल्लाह तक पड़ोया दे, ईस के आ वुजूद उज न करे वोह याहे यलूही हो कर मरे या ईसाई हो कर. (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٢ ص ٢١٩ حديث ٨١٢) अगर तुम ने वा'दा बिलाई की तो याद रખो ! जो वा'दा बिलाई करता है उस पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ किरिशतों और लोगों की ला'नत है और उस के न इर्ज कबूल किये जाअेंगे न नइल (صحيح البخارى ج ١ ص ٦١٦ حديث ١٨٧٠ دارالكتب العلمية بيروت)

1 : या'नी बिला वजह र-मजान में अेक रोज़ा भी न रखने वाला उस के ईवज उम्र त्तर रोज़ा रખे, तो वोह द-रज और सवाब न पाअेगा जो र-मजान में रखने से पाता अगर्ये शरअन अेक रोज़े से उस की कजा हो जाअेगी अदाअे इर्ज और है द-रज पाना कुछ और. (मिरआत, जि. 3, स. 167)

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه وسلم : जिस ने किताब में मुज़ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (उं.५)

अगर तुम ने बह निगाही की, किसी ना महरम औरत को देखा या अमरद को ब नज़रे शह्वत देखा या T.V., VCR, ईन्टरनेट और सिनेमा घर वगैरा पर झिम्में, डिरामे और बे हयाई से पुर मनाज़िर देभे तो याद रहो ! मन्कूल है : जिस ने अपनी आंभ हराम से पुर की अद्लाह तआला बरोजे कियामत उस की आंभ में आग त्बर देगा. और जिसे येह समजा दिया गया हो के अन्करीब तुम्हें भरना पड़ेगा क्यूंके हर जान को मौत से डम-कनार होना है जब वक्त पूरा हो जायेगा तो फिर मौत अेक पल आगे होगी न पीछे. और येह भी ईत्तिलाअ दे दी गई हो के मरने के बा'द उस कब्र में जाना है जो मुजरिमों पर तारीक और वहशत नाक छोती है, उन के लिये कीडे मकोडे और सांप बिखू भी छोते हैं और उस में हजारों साल रहना होगा. आह ! कब्र हर अेक को दबायेगी, नेकों को अैसे दबायेगी जैसे मां बिछडे हुअे लाल को शक़त के साथ सीने से चिमटा लेती है और जिन से अद्लाह جَزَاءُ नाराज होता है उन को अैसे लीयेगी के पस्लियां टूट फूट कर अेक दूसरे में इस तरह पैवस्त हो जायेगी जिस तरह दोनों हाथों की उंग्लियां अेक दूसरे में मिल जाती हैं. इसी पर ईक़्तिफ़ा नहीं बल्के इस बात से भी मु-तनब्बेह या'नी ખબરदार कर दिया गया हो के कियामत का अेक दिन पयास हजार साल के बराबर होगा, और सूरज अेक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, हिसाब किताब का सिव्सिला होगा, नेकों के लिये जन्नत की राहतें और मुजरिमों के लिये जहन्नम की आइतें होंगी.

करमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ اللَّهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रुदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमतें भेजता है. (स्म)

नादानि की घन्तिहा

धतना कुछ मा'लूम होने के बा वुजूद अगर कोई शप्स अल्लाह ज़ुंजु से कमा हक्कुडू न उरे. भौत की सप्तियों, कब्र की वदूशत नाकियों, कियामत की डोल नाकियों और जहन्नम की सजाओं का सहीह मा'नों में भौंफ़ न रभे, गइलत की नींद सोता रहे, नमाओं न पढे, र-मजानुल मुबारक के रोझे न रभे, इर्ज़ होने की सूरत में ली अपने माल की जकत न निकाले, इर्ज़ होने के बा वुजूद उज अदा न करे, वा'दा भिलाही उस का वतीरा रहे, जूट, गीबत, युगली, बद गुमानी वगैरा तर्क न करे, इल्मों डिरामों का शाईक रहे, गाने सुनना उस का बेहतरीन मशगला रहे, वालिदैन की ना इरमानी करे, गालियां बकने और तरह तरह की बे हयाई की बातों में मगन रहे अल गरज भुद को बिल्कुल ली न सुधारे मगर इर ली अपने आप को अकल मन्द समजता रहे तो जैसे शप्स से बढ कर बे वुकूई और कौन होगी ? और बे वुकूई की धन्तिहा येह है के जब सुधारने की जातिर समजाया जाये तो ला परवाही से येह कड दे के अस ज़ कोई बात नहीं अल्लाह ज़ुंजु तो रहीम व करीम है मेहरबानी करेगा, वोह करम इरमा देगा.

मगि़रत की तमन्ना कब हमाकत है ?

दुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ओहयाउल उलूम में इरमाते हैं : ईमान के बीज को ईबादत का पानी न दिया जाये या दिल को बुरे अफ्लाक से मुलव्वस छोड दिया जाये और दुन्यवी लज़्जत में मुन्डमिक हो जाये इर मगि़रत का धन्तिजार करे तो उस का धन्तिजार अक बे वुकूई और धोके में मुत्तला

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रूनी)

शप्स का इन्तिज़ार है. (احياء علوم الدين ج ٤ ص ١٧٥ دار صادر بيروت) नबिय्ये अकरम
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : आज़िज़ (या'नी बे वुकूफ़) शप्स वोह है
 जो अपने नफ़स को ज्वाहिश़ात के पीछे यलाता है और (ईस के बा वुजूद)
 अद्लाह तआला से आरज़ूरभे. (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ٢٠٧-٢٠٨ حديث ٤٦٧ دار الفكر بيروت)

जव जो कर गन्दुम काटने की उम्मीद हमाकत

मुइस्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत हज़रते मुइती अहमद यार
 भान एहदीसे पाक के तइत इरमाते हैं : ईस इरमाने
 आली में आज़िज़ से मुराद बे वुकूफ़ है. कय्यिस (या'नी अकल मन्द) का
 मुकाबिल, नफ़से अम्मारा से दबा हुवा या'नी वोह बे वुकूफ़ है जो काम
 करे दोज़भ के और उम्मीद करे जन्नत की, कहा करे, के अद्लाह गफ़ूररुहीम
 है. बाजरा बोअे और उम्मीद करे गेहूँ काटने की ! कहा करे के अद्लाह
 गफ़ूररुहीम है. काटते वक्त ईसे गन्दुम बना देगा. ईस का नाम उम्मीद
 नहीं. रब तआला इरमाता है : (٣٠٠ الانفطار) مَا عَزَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ
 إِنَّ النَّيِّينَ امْتَوُوا وَالنَّيِّينَ هَاجَرُوا وَاجْهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
 أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (٢١٨ البقرة)
 (तर-ज-मअे कन्ज़ुल ईमान : तुजे किस यीज़ ने इरेब दिया अपने करम
 वाले रब से) और इरमाता है : (عَزَّوَجَلَّ) के लिये अपने घरबार छोडे और अद्लाह
 (عَزَّوَجَلَّ) की राह में लडे वोह रहमते ईलाही के उम्मीद वार हैं और अद्लाह बज्शने वाला मेइरबान
 है) जव जो कर गन्दुम काटने की आस लगाना शैतानी धोका और नफ़सानी
 वस्वसा है. ज्वाज हसन बसरी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ) इरमाते हैं के : भा'ज़

करमाने मुस्तक। حلى الله تعالى عليه وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दुद पाक न पड़ा तब तक कि वोह बंद भूत हो गया। (ḥḥ)

लोगों को जूटी उम्मीद ने सीधे राह नेक आ'माल से हटा दिया है जैसे जूटी बात गुनाह है अैसे ही जूटी आस भी गुनाह है।

(मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 7, स. 102, 103, १६२, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

जहन्नम का भीज जो कर जन्नत की भेती का घन्टिजार !

हुजजतुल ईस्लाम हजरते सय्यिहुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي أَوْلَادِهِ : इज्जते सय्यिहुना यहुया बिन मुआज्ज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इज्जते हें : मेरे नजदीक सब से बडा धोका येह है के मुआझी की उम्मीद पर नदामत के बिगैर आदमी गुनाहों में बढता यला जअे, ईताअत के बिगैर अद्लाह तआला के कुर्ब की तवक्कोअ रभे, जहन्नम का भीज डाल कर जन्नत की भेती का मुन्तजिर रहे, गुनाहों के साथ ईबादत गुजार लोगों के घर (जन्नत) का तालिब हो, अ-मले भैर के बिगैर जअाअे भैर का ईन्तिजार करे और जुल्मो जियादती के बा वुजूद अद्लाह तआला से नजत की तमन्ना करे. - تَرُجُو النَّجَاةَ وَلَمْ تَسْأَلْكَ مَسَالِكَهَا إِنَّ السَّفِينَةَ لَا تَجْرِي عَلَى الْيَبْسِ - तुम नजत की उम्मीद रभते हो लेकिन ईस के रास्तों पर नहीं यलते यकीनन कश्ती भुशकी पर नहीं यलती. (احياء العلوم ج ६ ص १७६)

मुसीबत बाघसे घब्रत है

याद रभिये ! अद्लाह तआला बे नियाज है. उस की बे नियाजी को समजने की ईस तरह कोशिश कीजिये के क्या हुन्या में आप को कोई तकलीफ नहीं आती ? भुभार नहीं आता ? परेशानी लाहिक नहीं होती ? तंगदस्ती, कर्जदारी, बे रोजगारी के मनाजिर क्या आप ने कभी नहीं देभे ? हादिसात से वासिता नहीं पडा ? हाथों, पैरों या

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुज पर अक बार दुइदे पाक पढा अद्लाह एउस पर दस रउमतें भेजता है. (स्फ़)

आंभों वगैरा से मा'जूर नहीं देभे ? क्या दुन्या में तकलीफ़ों के नज़्ज़ारात आप को जहन्नम के अज़ाबात याद नहीं दिलाते ? यकीनन दुन्या की तकलीफ़ में अहले नज़र के लिये कब्रों आभिरत और जहन्नम के अज़ाबों की याद है. युनान्चे याद रभिये ! वोह रब्बे भे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ जो दुन्या के अन्दर बन्दों को भीमारियों, तकलीफ़ों और मुसीबतों में मुभ्तला कर सकता है वोह जहन्नम का अज़ाब भी दे सकता है.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अद्लाह एउस रोज़ी देने वाला है फिर भी.....

ईस बात पर ज़रा गौर इरमाईये के अद्लाह एउस रोज़ी देने वाला है और बिगैर वसीले के भी रोज़ी देने पर कादिर है येह आप का भी इमान है और मेरा भी. हां हां उस ने हर अक की रोज़ी अपने जिम्मअे करम पर ली हुई है जैसा के बारहवें पारे की इब्तिदाई आयत में इशाईद है : وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رُكُودُهَا : और जमीन पर चलने वाला कोई (जानदार) अैसा नहीं जिस का रिज़्क अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के जिम्मअे करम पर न हो.

फ़िर सोयने की बात है के जब अद्लाह तआला ने रोज़ी का जिम्मा ले लिया है तो आभिर क्यूं रिज़्क के लिये भागदौड करते हैं ? क्यूं अक शहर से दूसरे शहर जाते और वतन से भे वतन होते और “राहे माल” में आने वाली हर तकलीफ़ हंसी खुशी बरदाश्त करते हैं, ईस लिये के आप का जेहन बना हुवा है के में कोशिश कइंगा तो रोज़ी मिलेगी, ह-र-कत में भ-र-कत है.

इरमाने मुस्तफ़ा عَمَلُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर हुइते पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (प्रान्)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हर अेक की मगि़रत का जिम्मा नहीं लिया मगर.....

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हर अेक जानदार की रोजी अपने जिम्मे करम पर ले ली है मगर याद रभियो ! हर किसी मुसल्मान के इमान की डिफ़ाजत या बे हिसाब मगि़रत का जिम्मा नहीं लिया मगर फिर भी रोजी ही की इिक लगी हुई है, इमान की डिफ़ाजत और बे हिसाब मगि़रत की तलब के लिये किसी किस्म की हिलजुल नहीं शायद इस लिये के आज बहुत से लोगो के हिल सप्त हो चुके हैं लिहाजा हुन्या की फ़ातिर सफ़्तियां बरदाश्त कर लेते हैं, हुन्या कमाने के लिये रोजाना आठ, दस, बढे बारह घन्टे तक कोल्डू के बैल की तरह इरने के लिये तय्यार हैं. हाअे सद करोड अइसोस ! इमान की डिफ़ाजत व बे हिसाब मगि़रत की तलब में माहाना सिई तीन दिन के लिये म-दनी काइले में सइर की भी अगर दर-प्वास्त की जाअे तो येह कह कर हुकरा दिया जाता है के हमारे पास वक्त नहीं. ﷻ गोया ज़बाने हाल से कहा जा रहा है :

नइसो शैतान ने बह मस्त किया भाई है

हम न सुधरे हैं, न सुधरेंगे, कसम भाई है

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने नियाज है

यकीनन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ बिगैर सबब के मइज़ अपनी रहमत से जन्त में दाबिल इरमाने पर कादिर है. मगर उस की बे नियाजी से उरना ज़रूरी है, के किसी अेक गुनाह पर गिरिइत इरमा कर जहन्नम में भी जोंक सकता है. “मुस्नदे इमाम अहमद बिन हम्बल” में अल्लाहु रब्बुल इबाद عَزَّ وَجَلَّ का मुबारक इशाद नक़ल किया गया है : “येह लोग

ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुर्रह पाक न पढा तहकीक
 वोह बढ भप्त हो गया. (हिन)

जन्नत में जाअें तब भी मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं और येह
 जहन्नम में जाअें तब भी मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं.”
 (مسند امام احمد بن حنبل ج ٦ ص ٢٠٥ رقم ١٧٦٧٦ دار الفكر بيروت)
 अपने आप को बयाने और जन्नतुल फिरदौस में दाबिला पाने के लिये
 येह जेहन्न बनाना होगा के “मैं सुधरना याहता हूँ” और इस के लिये
 अपने अन्दर भौंके भुदा व ईशके मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पैदा
 करने की भरपूर कोशिश करनी होगी. अद्लाहु रब्बुल ईज्जत وَعَزَّوَجَلَّ की
 ईनायत से हम गुनाहों से बयेंगे और नमाजों और सुन्नतों की पाबन्दी
 करेंगे, म-दनी काइलों में सफर करेंगे, रोजाना रात “किंके मदीना”
 कइते हुअे “म-दनी ईन्आमात” का रिसाला पुर करेंगे और फिर हर
 माह अपने यहां के “जिम्मादार” को जम्अ करवाअेंगे तो ब इजले भुदा
 ब वसीलअे मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जहन्नम से बय कर
 दाबिले जन्नत होंगे जो के अस्ल काम्याबी है. जैसा के पारह 4 सूअे
 आले ईमरान की आयत नम्बर 185 में अद्लाहु रहमान وَعَزَّوَجَلَّ का
 फरमाने आलीशान है : **فَمَنْ رُحِمَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ قَارَىٰ**
 तर-ज-मअे कज्जुल ईमान : जो आग से बया कर जन्नत में दाबिल किया गया
 वोह मुराद को पड़ोंया.

सुधरने के लिये तौबा कर लीजिये

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बहर डाल, उस की रहमत से
 मायूस भी न होना याहिये और उस की बे नियाजी से गाइल भी
 नहीं रहना याहिये. और भुद को सुधरने के लिये हर दम कोशिश जारी
 रबनी याहिये. मैं उम्मीद करता हूँ के हम में से हर मुसल्मान की
 प्वाहिश है के मैं सुधरना याहता हूँ, तो जो वाकेई सुधरना याहते हें वोह
 अपने साबिका गुनाहों से सख्खी पक्की तौबा कर लें. बेशक अद्लाह

﴿1﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुइदे पाक पढा (उसे कियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी). (उरुआह)

करवाने मुस्तफ़ा कबूल करने वाला है. तरगीब के लिये तौबा के इजाअल पर मन्नी तीन अहादीसे मुबा-रका आप के गोश गुजार करता हूँ :-

﴿1﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “अन्दा जब अपने गुनाह का ऐतिराफ़ करता है फिर तौबा करता है तो अल्लाह उअर उअर उस की तौबा कबूल इरमाता है.” (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، ج ٢، ص ١٩٩، حديث ٢٦٦٦ دارالكتب العلمية بيروت)

﴿2﴾ **उदीसे कुदसी में है** : अल्लाह उअर उअर इश्राइ इरमाता है : “ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुनहगार हो सिवाये उस के जिसे मैं सलामती अता करूं तो तुम में से जो येह ज़ान ले के मैं बफ़्शने पर कादिर हूँ फिर उस ने मुज से मुआफ़ी मांगी तो मैं उसे बफ़्श दूंगा और मुजे कुछ परवाल नहीं.”

﴿3﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** (مَشْكَأَةُ الْمَصَابِيحِ، ج ٢، ص ٤٣٩، حديث ٢٣٥٠ دارالكتب العلمية بيروت) صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जो इस तरह दूआ करे : **اللَّهُمَّ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ : اَوْ ظَلَمْتُ نَفْسِي فَأَغْفِرْ لِي إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ .** या’नी “ऐ अल्लाह उअर उअर ! तेरे सिवा कोई मा’बूद नहीं, तेरी जात पाक है, मैं ने बुरे आ’माल किये और अपने नफ़स पर जुल्म किया, मुजे बफ़्श दे क्यूंके तेरे सिवा कोई बफ़्शने वाला नहीं.” तो अल्लाह उअर उअर इरमाता है : “मैं इस के गुनाह बफ़्श देता हूँ अगर्ने वोह खूंटियों की ता’दाह के बराबर हों.”

(کنز العمال ج ٢ ص ٢٨٧ رقم ٤٩٠٠٠ دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

अच्छी अच्छी नियतें

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अल्लाह तबा-र-क व तआला आप सब की तौबा कबूल इरमाये, आप सब का ईमान सलामत रहे, आप को बार बार उज नसीब इरमाये, बार बार गुम्बदे अज़रा दिभाये, मुज्लिस आशिके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बनाये और येह तमाम दूआओं मुज पापी व बहकार, गुनहगारों के सरदार के हक में भी

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

कबूल इरमाओ. हिम्मत कीजिये और आज से तै कर लीजिये : “मैं सुधरना याहता हूँ” लिहाजा अब मेरी कोई नमाज कजा नहीं होगी...
 2-मजानुल मुबारक का कोई रोजा कजा नहीं होगा...
 3-इलमैं डिरामे नहीं देखूंगा...
 4-गाने बाजे नहीं सुनूंगा...
 5-दाढी नहीं मुंडाउंगी...
 6-दाढी को अेक मुट्ठी से नहीं घटाउंगी...
 7-दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिख्यत के म-दनी काइलों में हर माह तीन दिन सफ़र किया करूंगा...
 8-रोजाना इक़े मदीना के जरीअे हर माह म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर करूंगा और हर म-दनी माह की 10 तारीख तक अपने जिम्मेदार को जम्म करवा दिया करूंगा...
 9-इलशा'अल्लाह

इलाही रहम इरमा मैं सुधरना याहता हूँ अब

नबी का तुज को सदका मैं सुधरना याहता हूँ अब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! बयान को इप्तिताम की तरफ़ लाते हुअे सुन्नत की इज्जिलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूँ. ताजदारे रिसालत, शहन्शाडे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे लिदायत, नोशअे बजमे जन्नत का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुज से महब्बत की और जिस ने मुज से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा. (مشکاة المصابیح، ج 1 ص 50، حدیث 170، دارالکتاب العلمیة بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

करमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ हुरद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शफ़ाअत कर्ग़ेगा. (क़ुरआन)

“ईस्मिद” के चार हुरद की निरबत से सुरमा लगाने के 4 म-दनी हूल

﴿1﴾ सु-नने ईबने माजह की रिवायत में हे “तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा “ईस्मिद” हे के येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता हे.” (सुन्न-अबु-माजह, ज ६, व ११०, हदित ३६९७) ﴿2﴾ पथर का सुरमा ईस्ति’माल करने में हरज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब कस्टे जीनत (या’नी जीनत की निखत से) मर्द को लगाना मक़ूह है और जीनत मक़ूह न हो तो कराहत नहीं (तुलुमा-अल-क़ुरआन, ५७, ५९) ﴿3﴾ सुरमा सोते वक्त ईस्ति’माल करना सुन्नत है (मिरआतुल मनाज्जह, जि. 6, स. 180) ﴿4﴾ सुरमा ईस्ति’माल करने के तीन म-कूल तरीकों का फुलासा पेशे बिदमत है : (1) कल्मी दोनों आंभों में तीन तीन सलाहयां (2) कल्मी दाई (सीधी) आंभ में तीन और बाई (उलटी) में दो, (3) तो कल्मी दोनों आंभों में दो दो और फिर आभिर में अक सलाह को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंभों में लगाईये.

إِنْ شَاءَ اللَّهُ से तरह करने से (انظر: شُعَبُ الْإِيمَانِ، ج 5، ص 218-219، دار الكتب العلمية بيروت) तीनों पर अमल होता रहेगा भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! तकरीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सीधी ज़ानिब से शुरुअ किया करते, लिहाजा पडले सीधी आंभ में सुरमा लगाईये फिर बाई आंभ में. सुरमे की सुन्नतों के बारे में तफ़सीली मा’लूमात हासिल करने और दीगर सेंकड़ों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 120 सफ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब” हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की

करमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرِ وَاللهُ وَحْدَهُ: मुज़ पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (रु. 1)

तरबियत का अेक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के म-दनी काङ्किलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों तरा सङ्कर ली है.

सीपने सुन्नतें काङ्किले में यलो वूटने रडमतें काङ्किले में यलो
होंगी डल मुश्किलें काङ्किले में यलो पाओगे ब-र-कतें काङ्किले में यलो

इंडरिस

उन्वान	अङ्क	उन्वान	अङ्क
निङ्कड व नार से नज्गत	1	सांस की भावा	15
जन्मत याहिये या दोज्जप ?	2	बे अमल बे वुकूङ्क डोता है	15
आभिरत की तय्यारी	3	जडन्म के डरवाजे पर नाम	16
रोशन मुस्तक़िबल	4	नादानी की इन्तिडा	18
अनोभा हिसाब	5	मङ्किरत की तमन्ना कब डमाकत है ?	18
अेडसासे नदामत है न षौङ्के आक़िबत	5	जव ओ कर गन्डुम काटने की उम्मीड डमाकत	19
बयपन की पता याद आ गई !	6	जडन्म का बीज ओ कर जन्मत	
बयपन के गुनाड को याद रपने		की षेती का इन्तिजार !	20
का निरावा अन्दाज	7	मुसीबत बाईसे इध्रत है	20
नाकिस नेकियों पर इतराना	7	अड्लाह جَزَّوَجَلَّ रोजी देने वाला है	
नेकी कर के लूल ज़ओ	8	ङ्किर ली.....	21
आज "क्या क्या" ङिया ?	8	अड्लाह جَزَّوَجَلَّ ने डर अेक की मङ्किरत	
ङाङ्के आ'जम رَحِمَى اللَّهِ تَعَالَى عَنْهُ की आङ्जिजी	8	का जिम्मा नहीं लिया मगर.....	22
ङियामत से पडले हिसाब	9	अड्लाह جَزَّوَجَلَّ बे नियाज है	22
मुडा-सबा ङिसे कडते हैं	10	सुधरने के लिये तौबा कर लीजिये	23
यराग पर अंगूठा	11	अख्ठी अख्ठी नियातें	24
कली डिपर न देभूंगा	11	इस्मिड के यार डुइङ्क की निस्बत से	
अगर जन्मत से रोक दिया गया तो !	12	सुरमा लगाने के 4 म-दनी इूल	26
डथ-ङडियां और बेडियां	14		